INTELLIGENTSIA
International Journal of Multidisciplinary Research
Volume (1), Issue (3)
October- December, 2025
Intelligentsia International Journal Of Multidisciplinary Research

पुष्पा प्रियदर्शनी 'पुष्प' के रचनाओं में सामाजिक एवं मानवीय चेतना

मिथलेश दास
शोध छात्र, हिंदी विभाग
राधा गोविंद विश्वविद्यालय,रामगढ़, झारखण्ड

सार :
साहित्य के महान महासागर में कुछ करना अतिशय सूक्ष्म होता है किंतु इस सूक्ष्म में भी छोटा से छोटा योगदान भी अतिशय मन को अनन्य सुख प्रदान करती है"—पुष्पा प्रियदर्शनी की यह पंक्ति न केवल साहित्य के प्रति उनके गहरे अनुराग और समझ को व्यक्त करती है, बल्कि यह साहित्य के महत्व को भी स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है। उनके अनुसार, भले ही साहित्य का योगदान प्रतीत होने में सूक्ष्म हो, फिर भी वह आत्मिक संतोष और आनंद की अनंत गहराई प्रदान करता है। साहित्य, कला और संस्कृति की वह एक अद्भुत पुष्प थीं जिन्होंने साहित्य के बगिया को और अधिक सौंदर्य प्रदान किया था, लेकिन अफसोस कि असमय उन्होंने इस संसार को अलविदा ले लिया। पुष्पा प्रियदर्शनी भारत के उन नवोदित साहित्यकारों और कवयित्रियों में थीं, जिनकी रचनाएँ समकालीन समाज के ज्वलंत मुद्दों पर सीधा हस्तक्षेप करती थीं, और अपनी लेखिका ताओं के माध्यम से समाज में हो रहे बदलावों और समस्याओं को बेबाकी से प्रस्तुत करती थीं।

कुंजी शब्द : पुष्पा प्रियदर्शनी 'पुष्प', हिंदी साहित्य,सामाजिक चेतना एवं मानवीय चेतना

प्रकाशन समयरेखा:
मूल पाण्डुलिपि प्राप्त – 01 अक्टूबर, 2025; सहकर्मी समीक्षण पूर्ण – 03 अक्टूबर, 2025; संशोधित पाण्डुलिपि प्राप्त – 06 अक्टूबर, 2025; स्वीकृत एवं प्रकाशित – 09 अक्टूबर, 2025
अनुशंसित संदर्भ
दास, एम. (2025). पुष्पा प्रियदर्शनी 'पुष्प' के रचनाओं में सामाजिक एवं मानवीय चेतना. इंटेलिजेंटसिया इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 1(3), 15 –21 .

भूमिका :

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। डिजिटल माध्यमों ने साहित्य को नयी व्यापकता दी है, परंतु इसके साथ ही साहित्य की मौलिक विधाओं में गंभीर परिवर्तन भी दृष्टिगोचर हुए हैं। आज जब रचनाकार साहित्य को जाति, धर्म, समुदाय अथवा क्षेत्रीयता के बंधनों में जकड़ने लगे हैं, तब उसकी मूल सार्वभौमिकता कहीं न कहीं क्षीण होती दिखाई देती है। ऐसे परिवेश में पुष्पा प्रियदर्शिनी जैसी नवोदित लेखिकाओं का योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने अपनी रचनाओं में साहित्य की मौलिकता को न केवल संरक्षित रखा, बल्कि उसे आधुनिक समय में प्रासंगिक भी बनाया। उनकी लेखनी इस बात का प्रमाण है कि साहित्य किसी भी पहचान या सीमित बंधन से परे है; उसका मूल उद्देश्य मानवीय संवेदनाओं का प्रतिबिंबन और समाज के लिए मार्गदर्शन है। पुष्पा की रचनाएँ इस यथार्थ को रेखांकित करती हैं कि साहित्य को संकीर्णताओं में बाँधना उसके स्वभाव के विरुद्ध है। अतः वे आज के दौर में साहित्यिक शुचिता और मौलिकता की प्रेरक मिसाल प्रस्तुत करती हैं।

पुष्पा प्रियदर्शनी 'पुष्प' का जीवन परिचय :

प्रियदर्शिनी पुष्पा का जन्म 17 अप्रैल 1979 को बिहार के बांका जिले के विष्णुपुर में हुआ था । उनके पिता स्व. आचार्य महेंद्र प्रसाद मनु और माता श्रीमती मणिमाला प्रसाद के सानिध्य में उन्हें साहित्य और संस्कृति के प्रति गहरी रुचि उत्पन्न हुई। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा गांव में ही प्राप्त की और इसके बाद 'संस्कृत-साहित्य और संस्कृत व्याकरण' में आचार्य की डिग्री हासिल की। शिक्षण के प्रति अपनी विशेष रुचि को देखते हुए उन्होंने बी.एड. किया और साथ ही रेडियो ब्रॉडकास्टिंग में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा भी प्राप्त किया। वर्ष 2004 में, प्रियदर्शिनी पुष्पा का विवाह बरौनी, बिहार निवासी शिक्षाविद् और साहित्यकार डॉ. श्याम किशोर प्रसाद से हुआ, जिन्होंने उनके जीवन एवं साहित्यिक सफर में हमेशा एक सच्चे साथी के रूप में सहयोग दिया। उनके दो बच्चे हैं, एक पुत्री श्यामभवी और एक पुत्र अथर्व। प्रियदर्शिनी पुष्पा का कैरियर साहित्यिक और शैक्षिक दोनों ही दृष्टियों से अत्यंत समृद्ध रही है। वे वर्तमान में एम.आर.एस.प्रा.सह.मा. सं. विद्यालय, विष्णुपुर, शंभुगंज, बांका, बिहार में शिक्षिका के रूप में कार्यरत थी। इसके साथ ही, वे अंगिका भाषा में लेखन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी सक्रिय रूप से भाग लेती रही। साहित्यिक दृष्टि से उनका योगदान विविध है। उन्होंने "पुष्प की अभिलाषा" नामक एकल काव्य संग्रह, चार साझा संकलन और विभिन्न महाकाव्य ग्रंथों में सह रचनाकार के रूप में योगदान दी हैं । वे "जनरामायण", "कृष्णायण" और "शिवमहापुराण" के तहत महाकाव्य ग्रंथों में प्रसंग लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं। साहित्यिक लेखन के साथ –साथ राष्ट्रीय -अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विविध साहित्यिक, कला एवं संस्कृति से जुड़े मंचो पर लेखिका ता वाचन करती थीं एवं अपने विशेष वाचन शैली के कारण सहज श्रोताओं से जुड़ जाती थीं ।

पुष्पा प्रियदर्शनी का लेखन छंदबद्ध लेखिका ता और धार्मिक साहित्य से जुड़ा हुआ है। उनके लेखन को भारतीय साहित्यिक परंपरा से जोड़ा जाता है और उनकी रचनाएँ देश-विदेश के प्रतिष्ठित संकलनों में प्रकाशित हुई हैं। उनकी काव्य रचनाओं में 2000 से अधिक दोहे और 50 से अधिक छंद सम्मलित है। साहित्य एवं संस्कृति के प्रति उनकी सेवा एवं उत्कृष्ठ योगदानों को लेकर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के द्वारा कई सम्मान और पुरस्कार प्रदान किए गए । 'जनरामायण अखंड काव्यार्चन' के सहसंपादक रही पुष्पा की यह संकलन 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में सम्मलित किया गया है। इसी प्रकार 'कृष्णायण अखंड काव्यार्चन' के तहत इन्हें 'कृष्णायण लेखन के सम्मान' से सम्मानित किया गया। छंदबद्ध भारत का संविधान में 'स्वप्रसंग लेखन', बिलासा छंद महालय के तहत 'प्रथम नवरत्न' में शामिल किया गया। वहीँ अखिल भारतीय काव्यमंच छंद: शाला संस्था के द्वारा छांदस सृजन साहित्य में ऋषि पिंगल काव्य साधना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही साहित्य सेवा में अग्रणी भूमिका के लिए साहित्योदय सम्मान, पूर्वोदय साहित्यिक संस्थान सम्मान, ब्रेनवेयर युनिवर्सिटी कोलकाता

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

के द्वारा सम्मान, राष्ट्रीय लेखिका संगम संस्थान सम्मान, विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ से 'विद्या वाचस्पति' का 'मानद सम्मान' से नवाजा गया । 11 जनवरी 2025 को प्रियदर्शिनी पुष्पा का आकस्मिक निधन हो गया, जो साहित्य जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

पुष्पा प्रियदर्शनी के रचनाओं में सामाजिक 'पुष्प'एवं मानवीय चेतना

वर्तमान समय में आपसी रिश्तों की ऊष्मा और सहजता कम होती जा रही है। रिश्तों को अब भावनात्मक नहीं, बल्कि स्वार्थ और उपयोगिता की दृष्टि से आँका जाने लगा है। मूल्य धीरे-धीरे खोते जा रहे हैं, और उसकी जगह पर दिखावा, आडंबर और लाभ-हानि का गणित हावी हो गया है। इसी पृष्ठभूमि में इनकी पंक्तियाँ अत्यंत तीखा व्यंग्य करती हैं-

"बांध रिश्तों को तुला पर है लगता तोल कुछ।
कर रहे रिश्ते निवेशित इस तरह बाजार में
कह रहा मुख बोल कुछ और खुल रहा है पोल कुछ।।"

यहाँ कवयित्री ने आधुनिक समाज की उस विडंबना को उकेरा है जहाँ रिश्तों की कीमत भावनाओं से नहीं, बल्कि तराजू पर तोलकर तय की जाती है। रिश्ते अब एक तरह से निवेश और लाभ के सौदे में बदलते जा रहे हैं। बाहरी मुखौटे पर मिठास झलकती है, पर भीतर की पोल असलियत उजागर कर देती है। यह पंक्तियाँ न केवल मानवीय संबंधों में आती गिरावट पर प्रहार करती हैं, बल्कि यह चेतावनी भी देती हैं कि यदि रिश्तों को बाजार और स्वार्थ की वस्तु बना दिया गया, तो उनका अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा।

वे भक्ति के शुद्ध स्वरूप और उसकी गहनता को स्पष्ट करती हैं। आज के समय में जब भक्ति भी प्रदर्शन और बाहरी आडंबर तक सीमित हो चुकी है, तब लेखिका इन पंक्तियों के माध्यम से वास्तविक भक्ति का मार्ग दिखाती हैं।

"भगत के भाव का प्रभाव चढ़े हरि पर बरबस वे बेचैन होके अकुलाते हैं।
भाव के सुभाव में विभाव हो या अनुभाव जिन भाव पूजे भक्त वही भाव पाते हैं।
चाहे बेर शबरी के या विदुर सागभात याज्ञसेनी या सुदामा प्रिय मन भाते हैं।
भाव से पुकारे भक्त भावना में डूब तब मोक्षदायी प्रभु भी तो भाव बंधे आते हैं।"

यहाँ लेखिका ने स्पष्ट किया है कि ईश्वर को प्रसन्न करने का मार्ग बाहरी चढ़ावे, आडंबर या दिखावटी पूजा नहीं, बल्कि **सच्ची भावना और निष्कपट भक्ति** है। प्रभु की कृपा उन पर ही बरसती है जो निर्मल हृदय से उन्हें पुकारते हैं। शबरी के बेर, विदुर का साग, याज्ञसेनी का निवेदन या सुदामा की सादगी—ये सभी उदाहरण यही सिद्ध करते हैं कि ईश्वर को वस्तु की कीमत से नहीं, बल्कि भाव की सच्चाई से बांधा जा सकता है। इसी प्रकार अपनी एक रचना –

मानव मन मानव नहीं, मानव हवसी जान।
अंतर में जंगल घना, बाह्य कलुष का खान।।
देखा-देखी में यहाँ , बना रहे सब रील।
अंतरंग क्षण बेचकर, करते हैं गुड फील।।
होड़ हाड़ की दौड़ में, सभी बने जाँबाज।

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

लत्ती मारण यंत्र से, बन जाते परवाज़।।
कुतर-कुतर कुतरन पहन, समझ रहे सौभाग्य।
मँहगाई तन पर दिखा , बस कुतरन का राज्य।।

में लेखिका ने आधुनिक समाज की विडंबनाओं, मानवीय मूल्यों के पतन और बाहरी आडंबर के पीछे छिपे खोखलेपन को तीखे शब्दों में उजागर किया गया है। आज का इंसान अपने भीतर से मानवीय संवेदनाओं को खो चुका है। वह मनुष्य न होकर हवस का दास बन गया है। उसके अंतर में अंधकार और जंगल की तरह बर्बर प्रवृत्तियाँ छिपी हुई हैं, जबकि बाहर से वह दिखावे और छल-छद्म का आडंबर ओढ़े रहता है। यहाँ आधुनिक समय में सोशल मीडिया संस्कृति की आलोचना की गई है। लोग अपनी निजता तक को बेचकर केवल 'गुड फील' पाने की होड़ में लगे हैं। जीवन का असलीपन खोकर वे आभासी छवियाँ गढ़ते हैं। भौतिक सफलता की अंधी दौड़ की ओर संकेत करते हुए बताती हैं कि मनुष्य मशीनों और हथियारों का दास बन गया है। प्रतियोगिता ने उसे निर्दयी और संवेदनहीन बना दिया है। यहाँ महँगाई की मार पर तीखा व्यंग्य करती इनकी पक्तियां रेखांकित करती है कि आमजन फटे-पुराने वस्त्रों को भी सौभाग्य मानने को विवश है। समाज में आर्थिक असमानता बढ़ी है, और जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ भी कठिन होती जा रही हैं।

समकालीन जीवन की कृत्रिमता, मिलावट और नैतिक पतन की समस्या को रेखांकित करते हुए लेखिका ने आधुनिक समाज में फैलती भौतिक प्रवृत्तियों, संबंधों की खोखलाहट और मूल्यहीनता पर तीखा व्यंग्य किया है।

जहर जहर को काटता, मीठा घातक द्योत।
चीनी तो मधुमेह का, बस बढ़ने का स्रोत।।

मिलावटों का दौर है, रिश्ते या सामान।
एक हृदय को पीर दे, दूजा छीने प्राण।।

शकुनि शकुनि के पाश में, कौन यहाँ अब संत।
लंका में लंका लगी, लंका है क्यों दंग।।

लेखिका ने इन दोहों में आधुनिक जीवन की विडंबनाओं को मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है। पहले दोहे में यह संकेत है कि आज का समाज स्वयं को सुधारने के बजाय "जहर से जहर काटने" की प्रवृत्ति में जी रहा है। यहाँ 'चीनी' प्रतीक है उन मीठे आडंबरों का, जो देखने में मधुर लगते हैं, परंतु भीतर से जीवन को रोगग्रस्त कर देते हैं। दूसरे दोहे में लेखिका ने वर्तमान समय की सबसे बड़ी त्रासदी—मिलावट—पर प्रहार किया है। मिलावट केवल बाजार के सामानों में नहीं, बल्कि मानवीय रिश्तों में भी गहराई तक घुस चुकी है। जो संबंध सुख और सांत्वना देने वाले होने चाहिए, वही आज पीड़ा और प्राणघातक परिणामों का कारण बन रहे हैं। तीसरे दोहे में लेखिका ने महाभारत और रामायण की प्रतीकात्मकता का सहारा लिया है। "शकुनि के पाश" से आशय छल, कपट और षड्यंत्र से है, जबकि "लंका में लंका लगना" वर्तमान समाज की आत्मविनाशक प्रवृत्ति का प्रतीक है। आज संत या सच्चे मार्गदर्शक मिलना कठिन हो गया है, क्योंकि हर ओर स्वार्थ और दुराचरण की ज्वालाएँ धधक रही हैं। इन पंक्तियों की साहित्यिक विशेषता यह है कि लेखिका ने प्रतीक, व्यंग्य और मिथकीय सन्दर्भों का कुशल प्रयोग किया है। सामाजिक जीवन की जटिलता और मानवीय संबंधों की खोखलाहट को सहज भाषा में, किंतु गहन

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

भाव के साथ व्यक्त किया गया है। ये दोहे केवल आलोचना ही नहीं, बल्कि चेतावनी भी हैं कि यदि समाज ने आत्मचिंतन न किया तो उसका भविष्य भी "लंका की दंग ज्वाला" की भाँति भस्म हो सकता है।

अपनी एक रचना **निर्वस्त्र एक स्त्री को नहीं अपितु भारतीय संस्कृति को कर रहे ये कुंठा-ग्रस्त मुट्ठी भर लोग।** लेखिका समकालीन समाज में नारी-अपमान, यौन हिंसा और सत्ता की चुप्पी पर तीखा प्रहार करती है। इसमें स्त्री के विरुद्ध बढ़ते अपराधों को केवल व्यक्तिगत त्रासदी न मानकर भारतीय संस्कृति और उसकी मूल मर्यादाओं पर सीधा आघात बताया गया है।

भेद-भाव अपमान, देह का क्यों हो करते।
स्वार्थ अहं कुविचार, दर्प में डूबे रहते।।

कर दुष्कर्म बलात, ताड़ते नारी निजता।
कुंठाओं से ग्रस्त, बेच आए नैतिकता।।

नारी ने अपमान, युगों से अनय सहे हैं।
मर्यादा को लूट, भेड़िए घूम रहे हैं।।

सत्ता के किरदार, स्वार्थ बस चुप्पी धारे।
करें कुकर्मी नाच, विवश हो इंसां हारे।।

अंतस में भूचाल, बाह्य है फैली ज्वाला।
लूटा तन का मान, घूँट ज्यों पीती हाला।।

बंद करो व्यभिचार, कुधर्मी कपट कुचाली।
करें दुशासन नाश, नारियाँ बनकर काली।।

यह काव्यांश नारी के विरुद्ध होने वाले अत्याचारों का केवल भावनात्मक चित्रण नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य भी है। लेखिका कहती हैं कि किसी स्त्री को निर्वस्त्र करना वस्तुतः भारतीय संस्कृति की आत्मा को अपमानित करना है। नारी का अपमान हमारी सभ्यता की मर्यादा का अपमान है। इन पंक्तियों में स्त्री पर होने वाले अपराधों के पीछे के कारण हैं- **स्वार्थ, अहं, कुंठा और दर्प को बतलाई हैं**। यह केवल व्यक्तिगत विकृति नहीं, बल्कि सामूहिक नैतिक पतन का प्रतीक है। समाज में "भेड़ियों" की भांति घूमते दुष्कर्मी मानवता को कलंकित करते हैं, जबकि सत्ता और व्यवस्था स्वार्थवश चुप्पी साध लेती है। लेखिका ने यहाँ *महाभारत* के दुशासन प्रसंग का स्मरण कराते हुए चेतावनी दी है कि यदि दुशासनों का अंत करना है तो स्त्रियों को स्वयं "काली" का रूप धारण करना होगा। यही प्रतिरोध सामाजिक परिवर्तन और नारी-मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा। यह रचना अपने प्रखर स्वर, तीखे व्यंग्य और मिथकीय प्रतीकों के प्रयोग से आधुनिक नारी-विमर्श को नयी ऊर्जा प्रदान करती है। इसमें केवल पीड़ा ही नहीं, बल्कि विद्रोह और प्रतिकार का उद्घोष भी है।

अपने एक बहुत ही मार्मिक और संवेदनशील कविता में कवयित्री ने श्रमिक जीवन की पीड़ा, संघर्ष और उसकी अस्मिता का गहरा चित्रण किया है। कवि ने मजदूर वर्ग की दयनीय स्थिति को केवल करुणा के रूप में नहीं, बल्कि उनकी मेहनत, धैर्य और समाज निर्माण में योगदान को रेखांकित करते हुए सामने रखा है।

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

न आँखों से ढले आँसू नहीं पलकों पे छाया है।
श्रमिक हैं श्रम बदौलत से अलख श्रम का जगाया है।।

अगर आसाब लाना हो बनो मजदूर तुम पहले।
नहीं परवाह जीवन की मुसल्लत आजमाया है।।

कराहें भूख का सहना हमें आता सदा यारों।
सुनाएं दर्द वह किसको जहाँ मुख मौन छाया है।।

यहाँ तन से भला मत हो मगर मन से बड़े छोटे।
बिखरते झोपड़ों में आस का चूल्हा जलाया है।।

बहा जिसके पसीनें से लहू के बूंद का कतरा।
वहीं फुटपाथ पर देखो खुले में घर बसाया है।।

सदा बच्चे पले मेरे गरीबी और तंगी में।
यही किस्मत लकीरों की समझ मन को मनाया है।।

हमें मजदूर जो कहते कभी तो झांक लो अंदर।
दिवस इक खास न अपना सदी मैंने सजाया है।।

यह कविता श्रमिक जीवन की उस त्रासदी का चित्रण है, जो सदियों से चली आ रही है। मजदूर के पास न स्थायी घर है, न सुख-सुविधाएँ; फिर भी उसी के पसीने और श्रम से सभ्यताओं की नींव रखी जाती है। मजदूर की आँखों से आँसू बहते नहीं, बल्कि उसकी पलकों पर ही दुःख और करुणा की छाया सदैव टंगी रहती है। भूख और गरीबी उसका स्थायी साथी है, परंतु वह अपने श्रम की बदौलत समाज को नई आशा और जीवन प्रदान करता है। झोपड़ों में टूटते-बिखरते जीवन के बावजूद मजदूर "आस का चूल्हा" जलाना जानता है। उसका श्रम ही सभ्यता की धड़कन है, और उसकी मेहनत से ही जीवन का पहिया चलता है। मजदूर अपने लिए किसी "एक दिवस" की चाह नहीं रखता; उसका पूरा जीवन ही संघर्ष, मेहनत और बलिदान का उत्सव है। इस प्रकार कवयित्री ने मजदूर को केवल करुणा का पात्र न बनाकर, समाज-निर्माण की धुरी और मानवीय जिजीविषा का प्रतीक बना दिया है।

उपसंहार :

पुष्पा प्रियदर्शनी 'पुष्प' की प्रस्तुत रचनाओं में सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदना का जो गहन चित्रण हुआ है, वह उन्हें एक संवेदनशील और सजग साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित करता है। उनकी कविताएँ केवल काव्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज के अंतर्विरोधों, विसंगतियों और मानवीय मूल्यों के ह्रास पर तीखा प्रहार हैं। उन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से न केवल स्त्री-अस्मिता, रिश्तों की खोखलाहट, आडंबरपूर्ण भक्ति और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों पर प्रश्न उठाए हैं, बल्कि मजदूर वर्ग की पीड़ा, अन्याय और शोषण को भी सशक्त स्वर में सामने रखा है। 'पुष्प' की रचनाएँ सामाजिक चेतना का ऐसा दर्पण प्रस्तुत करती हैं जिसमें आधुनिक समय की सबसे बड़ी समस्याएँ—भ्रष्टाचार, हिंसा, लैंगिक असमानता, मिलावटखोरी, सांस्कृतिक पतन और मूल्यहीनता—

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। उनके काव्य में जहाँ स्त्री की गरिमा और स्वाभिमान की रक्षा का आह्वान है, वहीं मजदूर के श्रम और त्याग को उचित सम्मान दिलाने की आकांक्षा भी है। साथ ही, वे यह भी स्पष्ट करती हैं कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को जगाने और उसकी सोच को दिशा देने का माध्यम है। मानवीय चेतना के स्तर पर उनकी कविताएँ करुणा और संघर्ष दोनों को स्वर देती हैं। वे समाज को यह याद दिलाती हैं कि यदि रिश्तों, संस्कृतियों और मानवीय मूल्यों को बचाना है, तो हमें आडंबर और स्वार्थ की दीवारों को गिराकर ईमानदारी, संवेदनशीलता और नैतिकता की ओर लौटना होगा।

संदर्भ सूची

1. प्रियदर्शिनी, पुष्पा. *पुष्प की अभिलाषा.* 2000, सहित्योदय प्रकाशन, दिल्ली.
2. पाठक, पंकज भूषण, एवं पुष्पा प्रियदर्शिनी. *कृष्णायण: साझा पद्य संग्रह.* 2000, सहित्योदय प्रकाशन, दिल्ली.
3. साहु, ओम प्रकाश, पुष्पा प्रियदर्शिनी, एवं अन्य. *छंदबद्ध भारत का संविधान.* 2024, हमरुह प्रकाशन, दिल्ली.
4. पाठक, पंकज भूषण, एवं पुष्पा प्रियदर्शिनी. *जन रामायण: अखण्ड काव्यर्चन: साझा पद्य संग्रह* , 2022, सहित्योदय प्रकाशन, दिल्ली.

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved